OM 15_Page 1 and 2 13-10-2014 17:01 Page 4

पवित्रता के बल से तुम जो चाहो कर सकते हो - ये ईश्वरीय महावाक्य हमें हमारी पवित्रता की याद दिलाते हैं। ''पवित्रता'' शब्द ही कितनी निर्मलता के प्रकम्पन प्रवाहित करता है। पवित्रता ही दिव्यता है। इस दिव्यता को प्राप्त करके आत्मा पूर्णतया प्रसन्नचित्त हो उठती है। इससे अन्तरमन की सम्पूर्ण अग्नि शान्त हो जाती है। ऐसी महानतम पवित्रता की ओर हमारे कदम अग्रसर हैं। अब हम अपने इस लक्ष्य में सम्पूर्णता कैसे प्राप्त करें, इसके लिए कुछ अनुभव-युक्त विचारों का उल्लेख यहाँ करेंगें। ''पवित्रता के प्रत्येक राही'' को इस प्रकार के विचारों से अपने जीवन में दृढता लानी चाहिए।

जिसने पवित्रता की आज्ञा दी है, उसने शक्ति भी दी है -

ज्ञान के सागर, परम शिक्षक शिव पिता का इस कलियुगी संघर्षात्मक वातावरण में पवित्रता की आज्ञा देना लोगों को समुद्र लाँघने जैसा अवश्य लगता है, परन्तु आज्ञा देने वाले को इसकी कठिनाइयों का सम्पूर्ण ज्ञान है। और क्योंकि वह सम्पूर्ण सृष्टि को पावन बनाने आये हैं अत: इस आज्ञा के साथ ही उन्होंने शक्ति भी दी है। जिन आत्माओं ने उनकी इस आज्ञा को शिरोधार्य किया, उन पर ईश्वरीय शक्तियों की किरणें फैलने लगती हैं। अत: ईश्वरीय शक्ति के समक्ष सम्पूर्ण पवित्रता को धारण करना वास्तव में ही सरल कार्य है।

हमने पवित्रता का पथ स्वेच्छा से चुना है।

प्रत्येक ईश्वरीय वत्स जानता है कि उसने यह तपस्या का मार्ग स्वेच्छा से चुना है। और जो कार्य स्वेच्छा से चुना जाता है, चाहे वह कितना ही कठिन क्यों न हो, सरलता से कर लिया जाता है। उसमें आने वाली कठिनाइयाँ भी आनन्ददायक लगती हैं। उसमें चाहे कितने भी कष्ट आयें, उन्हें सहज ही पार कर लिया जाता है। तो जबकि हमने पूर्ण स्वेच्छा से पवित्रता को अपनाया है तब भला उसमें अब भारीपन क्यों? प्रत्येक आत्मा जानती है कि पवित्र राहों पर चलकर ही हम नीचे उतरें हैं, हमने दु:ख अशान्ति के बीज बोयें हैं, अपनी चैन खोई है, इसीलिए तो अब हमने उत्थान का यह सर्वश्रेष्ठ रास्ता चुना है। तो हमें भी इस रास्ते में आने वाली कठिनाइयों में आनन्द अनुभव करना है। आगे बढ़ने का लक्ष्य रखेंगे तो नि:सन्देह आगे बढ़ते जाएंगे।

जिस पेड़ के आम नहीं खाने, उस पेड़ के पत्ते क्यों गिनें!

हमने भी व्रत लिया है, उस महाशत्रु रावण को विश्व से निष्कासित करने का। सम्पूर्ण पवित्रता हमारा व्रत है और किसी भी कीमत पर हम इस व्रत को निभायेंगे। इस व्रत को निभाने में ही आनंद है और यह व्रत ही शक्ति देता है। पवित्र संकल्प का भी हमारा व्रत है तो हमें प्रतिदिन अपने संकल्पों को दृढ़ करना होगा कि चाहे हमारे प्राण भी चले जाएँ परन्तु हमारा ये सम्पूर्ण पवित्रता का प्रण अमिट रहेगा। तब ही माया को ललकारने की शक्ति हम जीवन में अनुभव कर सकेंगे।

हम कलियुग की विकारी राहें त्याग चुके। मन से हमने उससे किनारा कर लिया। जबकि अब हमें पुन: उन राहों पर नहीं लौटना है। हम उधर बार-बार मुड़कर क्यों देखें! बार-बार उधर देखना स्पष्ट करता है कि हम मार्ग छोड़ तो आये लेकिन हमारी सूक्ष्म रूचि अभी उधर ही लगी हुई है। अत: जिन महान आत्माओं को सम्पूर्ण पवित्रता का लक्ष्य साध्य करना है, उन्हें इस अंतर-मन में छुपी हुई बाह्य आकर्षण की रूचि को भस्मीभूत कर देना चाहिए। और बार-बार चिन्तन करना चाहिए कि जिस पेड़ के आम खाने से हम नर्क में जा गिरे थे, तो अब उसके पत्ते गिनने में क्यों अपने अनमोल क्षण व्यतीत करें।

हमने पवित्रता का व्रत लिया है ।

भारतवर्ष में व्रत रखने की प्रथा अति प्राचीन है और आज तक भी माताएँ व्रत में पूर्ण आस्था रखते हुए उसके नियमों की अवहेलना नहीं करतीं। निर्जल व्रत रखने वाली नारी, मरते दम तक भी जल ग्रहण करना नहीं चाहती। इतिहास में भी कई वीरों के व्रत प्रसिद्ध है। कौन नहीं जानता मेवाड़ के महाराणा प्रताप ने अपने व्रत पर अडिग रहकर जंगलों में अनेक कष्टों का आलिंगन सहर्ष किया था। उनका व्रत था कि जब तक मैं मेवाड़ को स्वतंत्र नहीं करा लूंगा, शैय्या पर नहीं सोऊँगा, महलों में नहीं रहूँगा, और सोने चाँदी के बर्तनों में भोजन नहीं करूँगा। और इतिहास साक्षी है कि उन्होंने विपदाएँ देखी, परन्तु प्रतिज्ञा नहीं तोड़ी।

हमने भी व्रत लिया है, उस महाशत्रु रावण को विश्व से निष्कासित करने का। सम्पूर्ण पवित्रता हमारा व्रत है और किसी भी कीमत पर हम इस व्रत को निभायेंगे। इस व्रत को निभाने में ही आनंद है और यह व्रत ही शक्ति देता है। पवित्र संकल्प का भी हमारा व्रत है तो हमें प्रतिदिन अपने संकल्पों को दृढ़ करना होगा कि चाहे हमारे प्राण भी चले जाएँ परन्तु हमारा ये सम्पूर्ण पवित्रता का प्रण अमिट रहेगा। तब ही माया को ललकारने की शक्ति हम जीवन में अनुभव कर सकेंगे।

स्मृति को बढ़ावें।

जैसे प्रत्येक ब्रह्मावत्स को यह स्मृति दृढ़ हो गई है कि हम ब्रह्माकुमार कुमारी हैं, हमारा खान-पान शुद्ध है। यदि स्वप्न में भी हमें कोई अशुद्ध भोजन दे तो हमारी चेतना इतनी जागृत हो चुकी है कि हम उसे स्वीकार नहीं करेंगे। स्वप्न में भी हमें याद रहता है कि ये हमारा भोजन नहीं है। इसी प्रकार हम यह स्मृति दृढ़ करते चलें कि मै ''पवित्र आत्मा हूँ'', और अपवित्रता मेरा स्वधर्म नहीं है।

यह स्मृति जैसे दृढ़ होती जायेगी, हमारा जीवन स्वप्नों तक भी निर्मल होता जाएगा और स्मृति बार-बार के चिन्तन से ही दृढ़ होती है।

पवित्रता ईश्वरीय वरदान है।

परम पवित्र परमात्मा हम आत्माओं के लिए पवित्रता का वरदान लाये हैं। जिन्होंने अपना सर्वस्व न्यौछावर किया, उन पर उन्होंने ये वरदान लुटा दिया। अब हमारा कर्त्तव्य है इस वरदान को सुरक्षित रखना। यदि हम इस वरदान को समा नहीं पाते तो हमें अन्य वरदान भला कैसे प्राप्त होंगे! और जिन आत्माओं ने इस सर्वश्रेष्ठ वरदान को पूर्णतया सम्भाला है, उन्हें जीवन में अन्य वरदानों की भी प्राप्ति हुई है। अत: जो ईश्वरीय वरदान हमें मिले हैं, कम से कम हम उन्हें सुरक्षित रखना तो जानें।

- क्रमश:

जहाँ रुहानी ... पेज 1 का शेष

होना चाहिये, लेकिन हमनें औरों के हाथ में दे दिया है। हर व्यक्ति को खुशी, शांति, प्रेम, आनंद चाहिये, वो उसे पसंद है। लेकिन छोटी-छोटी बातों में हम अपनी खुशी गँवा देते हैं।

उन्होंने कहा कि पहले हमारा मन बीमार होता है फिर शरीर बीमार होता है जो मेमोरी हमारी है वो पास्ट की मेमोरी आगे जन्म में भी चलती है, वो संस्कार भी आगे के जन्म में चलते हैं। शरीर तो वो खत्म हो जाता है लेकिन वो कोई एन्टीटी है जो साथ चलती है, वो हमारे शरीर से भी ज़्यादा शक्तिशाली है, जिसे कॉन्शियनेस कहो, आत्मा कहो, वैल्यु सिस्टम कहो, नूर कहो या एनर्जी कहो।

इस कार्यक्रम में अहमदाबाद महानगर के 2000 से भी ज़्यादा डॉक्टरों ने पूरे दिन के सत्रों का लाभ उठाया। मेडिकल विंग गुजरात के संयुक्त क्षेत्रीय संयोजक डॉ. मुकेश पटेल, एक्ज़ीक्युटिव मेम्बर डॉ. अंकित पटेल और मेडिकल विंग की पूरी टीम के सहयोग से यह कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। फॉलो-अप कार्यक्रम में शहर के विभिन्न सेन्टरों पर डॉक्टर्स राजयोग शिविर का लाभ ले रहे हैं।

दिल्ली-सीता राम बाज़ार। हौज काज़ी पुलिस स्टेशन में ज्ञान चर्चा के पश्चात् समूह चित्र में इंस्पेक्टर जरनैल सिंह, सब इंस्पेक्टर, ब्र.कु. सुनीता तथा ब्र.कु. अनीता।

दिल्ली-स्वरूप नगर। बी.जे.पी. स्वास्थ्य प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय सह संयोजक दिनेश उपाध्याय व मथुरा के प्रख्यात कथा वाचक राकेश भारद्वाज को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. राजकुमारी। साथ हैं ब्र.कु. शारदा।

मेरठ-दिल्ली रोड। 'खुशनुमा जीवन' कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. सूर्य,माउण्ट आबू। साथ हैं विधायक सतप्रकाश अग्रवाल, ब्र.कु.आशा तथा ब्र.कु.श्वेता।

धमतरी-छ.ग.। चैतन्य देवियों की झाँकी का उद्घाटन करते हुए विधायक गुरुमुख सिंह होरा, ब्र.कु. सरिता, दीपक लखोटिया, सम्पादक,प्रखर समाचार, राजेश शर्मा,समाजसेवी, विनोद पाण्डेय,जिला अध्यक्ष एवं स्काउट एंड गाइड तथा विकास शर्मा,कांग्रेसी नेता।

फरीदाबाद। पूर्व मेयर सीमा त्रिखा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. ज्योति।

दिल्ली-लोधी रोड। पवन हंस लिमिटेड,नागर विमानन मंत्रालय भारत सरकार के केन्द्रीय कार्यालय में 'राजयोग द्वारा तनाव प्रबंधन' पर प्रवचन के बाद समूह चित्र में ब्र.कु. पीयूष, ब्र.कु. गिरीजा, आर.बी. कुशवाहा, उपमहाप्रबंधक, अशोक यादव,उपमहाप्रबंधक तथा अन्य प्रतिभागी।

कानपुर-जरौली। 'नारी सुरक्षा हमारी सुरक्षा कार्यक्रम में मंच पर उपस्थित अविनाश सिंह,जिला अपर अधिकारी, रामदत्त बागला, डिप्युटी डायरेक्टर,कृषि विभाग, डॉ. सविता तथा ब्र.कु. दुलारी।

मछलीपट्टनम। निर्विघ्न स्थिति साधना भट्टी व पर्ल ज्युबली कार्यक्रम में केक कटिंग करते हुए ब्र.कु. राजू,माउण्ट आबू, ब्र.कु. कुलदीप, ब्र.कु. सविता, ब्र.कु. शान्ता, मूर्ती जी, बाबा प्रसाद,चेयरमैन व कमिश्नर, दिवाकर जी तथा अन्य।